गुरुवाणी

नवयुवक भावावेश में आकर कोई ऐसा कार्य ना करें, जिससे किसी के भी मन को ठेस पहुँचे।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक ८, वाराणसी। गुरुवार ३० अप्रैल २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

चरित्र

परम पूज्य अवधूत भगवान रामजी के शब्दों में ''चरित्र क्या है? दूसरों का दोष नहीं देखना परनिन्दा नहीं करना बल्कि अपने भूलों एवं दोषों के लिये प्रायश्चित करना।'' यानी मनुष्य के उच्च विचार, उदारवादी दृष्टिकोण का ही दूसरा नाम चरित्र है। सबसे बड़ी बात यह है कि हम सभी प्राय: परदोषों या परनिन्दा में ही सुख पाते हैं और अपना ध्यान केन्द्रित कर लेते हैं। जबकि औघड़, अघोरेश्वर की वाणी में प्रथम अपने पर ही ध्यान रखने की नसीहत दी गयी है। अस्तु, स्पष्ट है कि यदि हमारी आपकी भावना दूसरे की आलोचना या परछिद्रान्वेषण की ही रहती है तो स्पष्ट समझिये हम सबके द्वारा सन्मार्ग का अनुसरण नहीं किया जा रहा है, बल्कि अपनी असली पूँजी चरित्र का हम स्वयं ही क्षति कर रहे हैं या कह सकते हैं कि अपने पांव पर स्वयं कुल्हाड़ी चला रहे हैं। इसके विपरीत यदि हम हर स्थिति, परिस्थिति में साम्य हैं, प्रसन्न हैं, दूसरों के सुख में सुखी एवं दु:ख में दु:खी होते हैं तो यह सद्लक्षण व्यक्ति को ऊँचा उठाता रहेगा। यद्यपि समाज में कुछ ऐसे भी प्राकृतिक रूप में विषधारी होते हैं जिनके चरित्र से आपको अपनी रक्षा भी करनी है। जैसे कि ट्रेन के सफर में जहरखुरानी गैंग का सदस्य आपसे मीठी लुभावनी बातें कर आपको अपने चंगुल में फाँसकर अपनी यथेष्ट सिद्धि कर लेता है तो उसका फल भी हमें ही चखना पड़ता है। जबकि संयमी एवं सिद्धान्त पर अटल रहने वाले चरित्रवान व्यक्ति सफर में किसी भी प्रकार से अनजान व्यक्तियों द्वारा दिये गये जल या पदार्थ तक का पान अथवा भक्षण कत्तई नहीं करते। उक्त छोटी-छोटी अच्छी आदतें आपको अनायास ही कई बाधाओं से मुक्ति दिला देती है। जिन्हें आप हम सच्चरित्रता के लक्षणों में ही स्थान देते हैं। अस्तु, चरित्रबल का धनी व्यक्ति लाखों में अपना अलग अस्तित्व रखता है क्योंकि उसकी मन:स्थिति संकीर्णता से कोषों दूर रहती है। ऐसा व्यक्ति सदैव अन्दर से सुदृढ़, सुखी एवं मस्त बना रहता है। अपने चरित्र बल यानी अनुशासित, मर्यादित जीवन यापन की प्रक्रिया से स्वत: उत्तरोत्तर बढ़ता चला जाता है। व्यक्ति का चरित्र उसके व्यक्तित्व के निखार के लिये साक्षात् संजीवनी सा होता है। जिसकी जड़ें जितनी गहरी होंगी, उसी के सापेक्ष्य चरित्र बल की वास्तविक पूँजी में बढ़ोत्तरी होगी और जीवन के पलों के भरपूर आनन्द का हम लाभ निरन्तर लेते रहेंगे। साथ ही चरित्र का विकास भी अपने आप होता जायेगा। जिसके प्रभाव से स्वमेव नैतिकता, सदाचार, निराभिमानिता, गम्भीरता आदि गुणों का समावेश होने लगेगा। जबकि एक अनुशासनहीन, चरित्रहीन व्यक्ति का जीवन बिना पतवार के उस नाव की भाँति थपेड़े खाती रहती है जिसका कोई नाविक नहीं होता। ऐसे व्यक्ति को कोई हृदय से सम्मान नहीं देना चाहता बल्कि उसका संगदोष संक्रामक बीमारी की भाँति फैलता है। जिससे प्रज्ञावान, विवेकी व्यक्ति अत्यन्त सावधान व सतत सतर्क बने रहते हैं। क्योंकि कमजोर चरित्र के व्यक्ति का जीवन निरुद्देश्य हो जाता है उन्हें भान भी नहीं होता कि हीरे जैसे जीवनकाल को वे कैसे निरर्थक कौड़ियों में बदलते जा रहे हैं।

अंग्रेजी में एक मशहूर कहावत है कि- "If wealth is lost, nothing is lost, if health is lost, something is lost, but when character is lost, everything is lost" यानी चरित्रदोष आने पर मनुष्य का ऐसे पतन होता है जैसे वह किसी ढलान से गिरता चला जाय और अन्तत: सब कुछ खो, गवांकर पश्चाताप करें एवं अफसोस के सिवाय उसे कुछ भी प्राप्त न हो। जिससे जीवन पर्यन्त सिर धुन-धुन पछताने के लिये वह बाध्य हो जाय। क्योंकि जैसा कि अंग्रेजी में उद्धृत है- धन, स्वास्थ्य, पद, ऐश्वर्य की पुनर्प्राप्ति हो सकती है। परन्तु चरित्र से च्युत व्यक्ति की अवस्था बड़ी ही कारुणिक एवं हृदय विदारक हो जाती है। अत: ससमय यदि व्यक्ति सावधानी से अपने पर नियंत्रण करें, कर्त्तव्य के साथ सद्विवेक को जाग्रत रखें, समाज द्वारा निषेधित, अमर्यादित कार्य से विरत रहें तो नि:सन्देह ऐसा व्यक्ति सफल जीवन यापन करने का अधिकृत होता है।

चरित्रवान की पहचान समाज में ऐसे ही हो जाती है जैसे जंगल में सिंह की पहचान। उसके चाल-चलन, व्यवहार, बातचीत में कहीं भी दूर-दूर तक दुर्गुण का समावेश नहीं होता। न तो उसका दोहरा चरित्र ही होता है। उसके कथनी करनी में भी अन्तर नहीं होता। वह अपने चरित्र बल के प्रभाव से अत्यन्त विनयशील, संयमी एवं साहसी होता है। वह कभी अपने सिद्धान्तों, वसूलों से समझौता नहीं कर सकता, न तो थोथी तड़क-भड़क, देखादेखी अथवा भौतिकता के विनाशकारी चंगुल में ही फँसता है। जबकि कमजोर चरित्र का व्यक्ति इसका विलोम होता है वह जिन्दगी भर उन अवसरों को प्राप्त नहीं कर सकता जो चरित्रवान व्यक्तियों द्वारा हस्तगत किये जाते रहते हैं। यद्यपि कोई बड़ा विद्वान होकर भी यदि चरित्रवान नहीं है तो वह उस मजबूत अंधे पशु की तरह है जो कहीं भी कभी भी किसी खाई में गिर सकता है तथा बेवजह अपना प्राणोत्सर्ग कर व्यक्तित्व की इतिश्री कर लेता है। जबकि चरित्रवान व्यक्तित्व का व्यक्ति निश्चित रूप से, मानसिक रूप से पूर्णत: स्वस्थ होता है। उसे अपने दोषों, विकारों को हटाने में तथा अपने को पूर्णतया, दोषमुक्त पवित्र रखने में आनन्द की अनुभूति होती है। ऐसा व्यक्ति समाज का अगुवा, युगद्रष्टा एवं पुरुषार्थी होता है। वह कभी भी स्वार्थ का वशीभूत होकर विकृति से युक्त नहीं होता। बल्कि वे अपने मस्ती में आनन्द का एकरस जीवन जीते हैं तथा सादगी के साथ सबकी खुशी में खुश एवं परदु:ख बाँटने को तत्पर रहते हैं। क्योंकि उन्हें ईश्वर प्रदत्त प्राणियों से प्यार होता है। चरित्रवान को दैवयोग से कभी दु:ख का सामना भी करना पड़ा तो दु:ख के पहाड़ धुएँ के पहाड़ के सदृश्य छट जाते हैं।

चरित्रबल को धारण करने के लिए, इस अद्भुत पूँजी को समृद्ध करने के लिए व्यक्ति को अन्दर से सशक्तता लानी पड़ती है। उसे अपनी चंचलता, मर्कटता को दूर भगाना पड़ता है। तभी हमारे मानस पटल में चरित्र रूपी सघन वृक्ष की छाया स्थायी रूप से अपना प्रभाव डालेगी। जिससे जीवन में स्थायी सुख-शान्ति की प्राप्ति होगी। बशर्ते कि अपने कर्त्तव्य के संदर्भ में हम स्वयं पर दया करते हुए ईमानदारी बरतें। मन, कर्म एवं वचन से निष्ठावान बने रहें। जिससे किसी दुर्मति का कुभाव, अपमान या अपशब्दों का प्रभाव भी हमारे ऊपर नहीं के बराबर हो। चरित्रवान व्यक्ति की इतनी ऊँचाई होती है कि संकीर्ण मानसिकता का व्यक्ति उसके आगे बौना सिद्ध होता है। चरित्रवान व्यक्ति की समान दृष्टि भी होती है। वह उसे छल, कपट का असुर बेढंगा

शेष पृष्ठ दो पर

शान्ति चाहिए तो माँ की शरण लें

हम सभी भली भाँति अवगत है कि अघोर-दर्शन में शिव शक्ति की ही आराधना की जाती है। अघोरेश्वर को साक्षात शिव की संज्ञा दी गयी है जो प्रतिपल जगन्माता से प्राप्त शक्ति पुंज से ही सृष्टि का नियमन करते रहते हैं। प्रत्येक प्राणी अपने प्राण शक्ति के बल पर ही जिन्दा चलता फिरता है। प्राण वायु अदृश्य रूपी से उसके शरीर के प्रत्येक रक्त कणों से लेकर अणुओं में समाहित रहती है। जिसे वैज्ञानिक ऊर्जा या शक्ति कहते हैं। इसी प्राण शक्ति से अनुप्राणित होकर जीवन भर हम नाना प्रकार के कर्त्तव्य करते हुए अन्ततः इसी असीम ऊर्जा में संलिप्त हो जाते हैं। यानी जगन्माता के विशाल शान्ति गोद में समा जाते हैं। सृष्टि का संचालन उन्हीं के द्वारा होता है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव इन्हीं के विभिन्न स्वरूप हैं। जिसका सटीक सचित्र चित्रण क्रींकुण्ड वाराणसी के मुख्यद्वार से प्रवेश करते ही दक्षिण अवस्थित बारादरी के भित्ति चित्र में किया गया है। जिसमें जगन्माता द्वारा ही शक्ति पुंज प्रवाहित कर अघोर यानी अघोरेश्वर के ही विभिन्न अंश रूप त्रिदेव तथा मानव के साथ ही समस्त सृष्टि के सृजन का संक्षिप्त परन्तु सरल बोधगम्य स्वरूप प्रकट किया गया है। साथ ही स्थल के प्रमुख द्वार के ठीक उत्तर में माँ का मंदिर है। जिसके ऊपरी दीवार पर यह सूक्ति अंकित है, **''शान्ति चाहिए तो माँ की शरण लें''** क्योंकि प्रत्येक प्राणी या मानव चाहे विश्व के किसी भूभाग का निवासी हो उसे शान्ति सुरक्षा एवं प्राण रक्षा की आवश्यकता सर्वोपरि होती है। मनुष्य के पास सब कुछ होते हुए भी यदि परम तत्त्व शान्ति का अभाव है तो वह वास्तव में वैसे ही छटपटाहट में जीता है जैसे किसी प्राणी को मनभावन भोज्य पदार्थ के बावजूद जल का अभाव बेचैन कर दें। प्रत्येक मनुष्य या प्राणी के शरीर में प्राकृतिक रूप से जिस प्रकार जल की मात्रा सर्वाधिक होती है उसी प्रकार मानव को मानसिक शान्ति की भी आवश्यकता होती है। यही उसके अन्तर्रात्मा की पुकार भी है। जिसे हम अपने दुर्गुणों, लालच, ईर्ष्या, तृष्णा, राग-द्वेष के प्रभाव में अनदेखी और अनसुनी करते रहते हैं। जिससे दिनोदिन पंक में फँसते चले जाते हैं। फलतः शान्ति हमसे अपेक्षाकृत दूर होती जाती है। अतः हम कह सकते है कि शान्ति जगत् जननी का ही अंशभूत है। जिसे सहज ही पाकर हम निहाल हो जाते हैं।

अस्तु स्थायी रूप से जीवन में शान्ति प्राप्त हेतु एक ही विकल्प है कि हम मन, कर्म, वचन से सर्वतोभावेन माँ की शरण लें। हमें सोते समय गाढ़ी निद्रा यानी भरपूर ऊर्जा मिलें जिसका सदुपयोग हम अपने जीवन निर्वाह या लोकोपकार में जाग्रत अवस्था में करते रहें। इसी को ध्यान में रखते हुए अघोरेश्वर के द्वारा प्रणव के साथ ही माँ-माँ-माँ का हृदय से उच्चारण कराया जाता है। तत्पश्चात् **''सर्वेश्वरी त्वं पाहिमाम् शरणागतम्''** के साथ ही महामाया के कई नामों को उद्धृत कर हम शरणागत हो आराधना करते हैं तथा उनसे याचना करते हैं कि हे माँ! हम सबको अपनी शरण में स्थान दें ताकि हमें शान्ति सद्कृपा प्राप्त हो तथा उक्त आराधना जितनी तन्मयता से करते हैं रोम-रोम हमारा ऊर्जा से अप्लावित हो जाता है एवं माँ गुरु का आलिंगन हमें सरलता से प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार माता की अनुग्रह कृपा से **असतो माँ सदगमय, तमसो माँ ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतगमय** की ओर स्वमेव मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

अस्तु आज के बढ़ते उथल पुथल, भूकम्प, आपाधापी, अशान्ति, भय, आक्रोश के वातावरण से यदि वास्तव में मुक्ति की चाह है तो इसकी प्राप्ति कण-कण में व्याप्त माँ के ही चरण शरण में सम्भव है। हमारी प्रत्येक अपरिहार्य आवश्यकता की पूर्ति जगत् जननी के द्वारा ही की जाती है। बस आवश्यकता है अबोध बालक की भाँति निश्छल हृदय से पुकार करने की। जिससे माँ द्रवित हुए बिना नहीं रह सकतीं तथा अघोरेश्वरी के द्वारा हमारे लिये उस लाभकारी वांछित फल को प्रदान किया जाता है जो हमें जीवन में सुख-शान्ति दें। इसी प्रयोजन की सिद्धि हेतु माँ हिंगलाज, माँ सर्वेश्वरी आदि-आदि नाम, जप से माँ को पुकार कर हम कृतार्थ होते हैं।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**

e-mail–kinaram@rediffmail.com

www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

नहीं बना पाता, उसके सौहार्द्र को भंग नहीं कर सकता क्योंकि वह अपने कड़े चरित्रबल के रक्षा कवच से सतत रक्षित रहता है। उसे किसी की भी आलोचना, निन्दा में रुचि नहीं रहती बल्कि उसका अपना सिद्धान्त दूसरों को सम्मान देना ही होता है न कि अपमान करना। वह किसी भी तरह के अतिशयवादिता से युक्त नहीं होता। वह तो सतत प्रसन्नबदन, हर हाल में खुश रहने वाला, स्फटिक की भाँति पारदर्शी होता है। हँसी-ठहाकों से वह न केवल अपने को तनाव मुक्त रखता हैं बल्कि आस-पास के व्यक्तियों में भी वह सद्उपहार सतत बाँटता रहता है। यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति की पूछ हर जगह, हर समाज में होती है। उसके आते ही आस-पास के व्यक्तियों में आदर, सत्कार एवं सम्मान का भाव जाग्रत हो जाता है। यद्यपि चरित्रवान व्यक्तियों को हृदय से अपने प्रति विशेष सम्मान, आदर या चापलूसी की चाह कत्तई नहीं होती। क्योंकि वे लम्बे सन्मार्ग के पथिक होते हैं। वे प्रकृति के पुजारी होते हैं तथा स्वतंत्र भाव से अपने आचरण, कर्म एवं कदम से ऐसा पथ प्रशस्त करते हैं जिससे अनायास ही लोग उनके प्रति आकर्षित होकर अनुयायी हो जाते हैं। सदाचरण का व्यक्ति शुद्ध खरा खरा सोना होता है। उसमें जरा भी खोटापन, मिलावट अथवा कृत्रिमता का लेश भी नहीं होता। वह अघोर सागर के उस मछुवारे की तरह होता है जो नाव लेकर उतंग लहरों, नाना प्रकार की परिस्थितियों, बाधाओं को प्रतिदिन अपने एकाग्र भाव से तिरोहित करते हुए लक्ष्य को प्राप्त करता है तथा एक स्वच्छ जीवन जीने का अधिकृत होता है।

चरित्र एवं चरित्रवान व्यक्ति की आवश्यकता हर वर्ग में या समाज में होती है। यहाँ तक कि चोर, डकैत, लुटेरों को भी लूट के माल के बँटवारे में ईमानदारी अच्छी लगती है। कर्त्तव्य पथ से गिरे व्यक्ति भी यह चाहते है कि उनकी सन्तान उनकी भाँति नाना प्रकार के क्लेशों का सामना न करें। उनका जीवन सच्चरित्र हो जबकि होता यह है कि वे अपनी सन्तान को बचपन से ही परोक्ष रूप से दुर्गुणों से आच्छादित कर देते हैं। फलतः वह विषघड़ा समय आने पर फूटता है तथा दुष्परिणाम की दुर्गन्ध फैलाता है। हालांकि बालपन या अवचेतन मन अपने घर की पाठशाला में जो शुभ या अशुभ कार्यों का ककहरा पढ़ लेता है उसका प्रभाव उस पर आजीवन बना रहता है उसमें बालक का कोई दोष भी नहीं है क्योंकि समय रहते उसे तराशा नहीं गया बल्कि जंगल के काँटेदार, झाड़ी की तरह उसे फैलने दिया गया और अन्ततः

चरित्र

समाज में जीवन पर्यन्त दुःख भोगने को विवश कर दिया गया। ऐसे ही दुष्कर्मों से विरत करने हेतु समय-समय पर मनीषीजन ने अपनी वाणी से प्रेरित किया हैं। कबीर दास जी कहते हैं कि—

करता था सो क्यों किया अब करी क्यों पछताय।
बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ ते खाय।।

अतः समय रहते हुए यदि हम अपने चरित्र को, विचारों को पवित्रता से प्रक्षालित नहीं करेंगे। आने वाले दुर्विचारों को गन्दी मक्खी की तरह हटाते, उड़ाते नहीं रहेंगे तो निश्चित रूप से हम मानसिक, शारीरिक महामारी के एक दिन शिकार हो जायेंगे एवं अनजाने में ही अपने सत् गन्तव्य से बहुत दूर चले जायेंगे। जहाँ से पुनः लौटना बड़ा ही दुष्कर एवं कठिन होगा। विशेषकर जो अपने को सर्वेश्वरी या औघड़-अघोरेश्वर से जोड़ते हैं उन्हें तो समाज के नेतृत्व की विशेष जिम्मेदारी दी गयी है। ताकि वे अपने चरित्र आचरण में सतत सुधार वृद्धि के साथ ही अपने परिवार एवं समाज का कल्याण कर सके। उनकी भावनायें तद्नुरूप यदि नहीं बनती है तो वे भी उस अंधे की तरह है जो नियाग्रा प्रपात पर खड़े रहने के बावजूद उसके सौन्दर्य बोध से कदापि अवगत नहीं होता। यद्यपि उसे ठंडी, समीर तो मिल सकती है लेकिन उसका भरपूर सदुपयोग करने से वह सर्वथा वंचित रह जाता है ऐसे में हमारे लिये परम आवश्यक है कि हम अपने दोनों पैरों को ऐसी दिशा में अग्रसर करें, हमारे मन का चाल-चलन एवं शरीर की मनोदशा ऐसी हो जिससे स्वयं के साथ ही समाज, राष्ट्र का भी कल्याण हो सके। जिसका एकमात्र विकल्प चरित्रवान व्यक्ति ही है एवं उसका महत्वपूर्ण वह आचरण जिससे समाज में उससे सम्मान प्राप्त होता है। इसलिये कहा गया है कि— **''मन भर ज्ञान से कण भर आचरण श्रेष्ठ होता है।''** अतः प्रत्येक दिवस प्रत्येक व्यक्ति को सोने के पूर्व एवं प्रातः जागने के पश्चात् अपने अघोरेश्वर ईश से ऐसे कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होने हेतु अनुनय-विनय किया जाना चाहिए। जिससे हमारा एक-एक पल अत्यन्त सादगी, सुरुचिपूर्ण एवं आनन्द से भरापूरा हो। इसी को दृष्टिगत रखते हुए परमपूज्य अवधूत भगवान राम जी के द्वारा अघोर वचन शास्त्र में **''चरित्र''** शीर्षक अध्याय को विशेष स्थान दिया गया है एवं १०८ मनकों में इसके विभिन्न स्वरूप का बोधगम्य शब्दों में निरूपण किया गया है। जिसे पढ़कर, मनन कर प्रत्येक व्यक्ति अपने को धन्य एवं कृतार्थ कर सकता है।

स्वयंसिद्ध अघोराचार्य बाबा सिद्धार्थ गौतम राम के प्राकट्य दिवस पर विशेष

आदि अनादि रिक्तिपुंज हैं क्रींकुण्ड के पीठाधीश्वर

हे सिद्धेश्वर! हे महेश्वर!!
तुम राघव माधव हे परमेश्वर!
तुम बोधिसत्व कैवल्य स्वयम्
सिद्धार्थ गौतम हे सर्वेश्वर!
हे अग्नि-रुद्र हे परम शुद्ध
करुणा-सागर हे महाबुद्ध।
तुम परम धाम अविराम राम
स्वीकार करो मेरा प्रणाम।।

सदाशिव की क्रीड़ा स्थली काशी में अविनाशी के शीश से नि:सृत सदानीरा भगीरथी के प्रवाह के साथ ज्ञान, भक्ति, योग, वैराग्य की अजस्र सहस्र स्रोतस्विनी अपनी गतिगामिता में निरन्तरता सहित प्रवाह्यमान है। बहिष्कार के स्थान पर परिष्कार, संहार के स्थान पर निर्माण जैसी शिवात्मकता की अक्षुण्णता हेतु सिद्धेश्वर स्थल क्रींकुण्ड स्रष्टा के लेख पर मेख मारते हुए कराल काल के कुअंक का सुन्दर व सुअंक निर्माता रहा है। २०वीं शताब्दी के महान संत औघेड़ेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान राम जी ने क्रींकुण्ड कीनाराम स्थली में सूक्ष्म रूप में विचरण कर रही औघड़ेश्वरों की दिव्य आत्माओं का स्वयं साक्षात्कार किया। नियंता के पूर्ण संहार के विरुद्ध क्रींकुण्ड पीठ का धर्म संघर्ष बुढ़ऊ बाबा राजेश्वर राम ने श्रीगणेश की और युगपुरुषोत्तम औघरेश्वर महाप्रभु ने समझौते पर आपत्ति सहित नूतन संघर्ष का सूत्रपात किया। २९ नवम्बर १९९२ को अपने नूतन स्वरूप को सर्वोड्घरार्थ सर्वेश्वरी समूह देव स्थानम् का अध्यक्षीय दायित्व सौंपकर कपाल खप्पड़ में प्रवेश की अलौकिकता का निर्वाह करते हुए मूर्तरूप में सिद्धेश्वर महाकपालेश्वर अघोराचार्य बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी संज्ञा रूप में क्रींकुण्ड पीठाधीश, सर्वेश्वरी समूह एवं अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के अध्यक्ष की भूमिका में अधूरे संघर्ष को गति दे रहे हैं।

कुमार युवराज फिर महाराजाधिराज– स्रष्टा शंकर के संहार से संघर्षतरत बुढ़ऊ बाबा दत्तात्रेय स्वरूप राजेश्वर राम जी ने १० फरवरी १९७८ को कपाल खप्पड़ में प्रवेश किया। जबकि उन्हें १९५८ में ही नश्वर का परित्याग कर शाश्वतता ग्रहण करनी थी। दत्तात्रेय स्वरूप गुरुनिधिद्वारा नश्वर शरीर त्याग की जिद ने अपने ही स्वरूप निर्माण के लिए विवश कर दिया। बहरहाल, १ मई १९६९ को अघोरेश्वर महाप्रभु ने अपनी शक्ति समुच्चय स्वरूप औघड़ सिद्धार्थ गौतम राम संज्ञा सहित छ: माह का शिशु को अवतरित की। ५ वर्ष की आयु में सम्पूर्ण लौकिक संस्कार, नाम करणादि सम्पन्न कराकर १० फरवरी १९७८ को अपने गुरु के निर्वाण पर्व पर गुरुपीठ सौंप स्वयं महाप्रभु ने गुरु गद्दी एवं अपने स्वरूप शिष्य का नमन किया। बहरहाल, १९६९ में कुमार, १९७८ में युवराज एवं १९९२ में औघरेश्वर द्वारा कपाल खप्पड़ प्रवेश के बाद सर्वेश्वरी समूह के अध्यक्ष एवं अघोर भक्तों के हृदय सम्राट महाराजाधिराज बन गये बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी।

शाक्य कुमार की भाँति पड़ाव स्थित अवधूत भगवान राम पाठशाला से लेकर सारनाथ तिब्बती उच्च शैक्षिक संस्थान में सिद्धार्थ गौतम का विद्याध्ययन, बुद्धत्व की दीक्षा एवं स्वयं सिद्ध सिद्धार्थ गौतम राम परीक्षा नहीं परिणामदायक है। आडम्बर रहित अघोर साधक साधना, साध्य एवं बुद्ध है बाबा गौतम राम जी।

गुणवाचक संज्ञाधारी बाबा अंधकार पर प्रकाश की संज्ञा है– त्रिगुणात्मक शक्ति संज्ञा दत्तात्रेय, कालू संज्ञा महाकपाल, बुढ़ऊ बाबा राजेश्वर राम महाराजाधिराज की संज्ञा है। भगवान संज्ञा भवसागर पार कराने वाली संज्ञा है। उसी प्रकार सिद्धार्थ गौतम सिद्धि हेतु अन्धकार रूपी विघ्नों को दूर करने वाली संज्ञा है। बहरहाल, क्रींकुण्ड पीठाधीश्वर सदाशिव बाबा गौतम राम परमात्मा के तमाम गुणवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय हैं। घट घट व्यापकता रमता राम संज्ञा हैं जिसकी दुहाई बड़े सरकार ने **'घट घट में विराजत है, सो कौन?'** स्पष्ट है कि घट-घट व्यापी वर्तमान सरकार महाकपालेश्वर अघोराचार्य, अघोरेश्वर नर तनधारी बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी ही है जिनका नमन अघोरेश्वर महाप्रभु ने आत्मस्वरूप में किया था।

कुमार महाराज एवं महाराजाधिराज– अघोरेश्वर महाप्रभु की माँ गुरु संज्ञा १ मई १९६९ को कुमार के अवतरण से हुआ। १९७५ में सिद्धार्थ संज्ञा बाबा राजेश्वर राम के युवराज की है और १० फरवरी को बाबा सिद्धार्थ गौतम ने महाराजश्री पद पर आसीन हुए फिर २९ नवम्बर १९९२ को बड़े सरकार के वसीयतानुसार सर्वेश्वरी समूह के अध्यक्ष बने महाराजश्री महाराजाधिराज हैं। क्रींकुंड पीठ से सृष्टि शासन का संचालन निर्बाध रूप से कर रहे हैं। अघोरेश्वर पद प्रतिष्ठा, मान-बड़ाई स्तुति से निस्पृह हैं। आश्रमों का संचालन चाहे जो भी कर रहे हो, महाराजश्री की इच्छा से ही हो रहा है। चाहे कुष्ठाश्रम हो, ब्रह्मनिष्ठालय हो, अभेदाश्रम हो या शाखाएँ हो। अघोरेश्वर के विग्रह स्वरूप आश्रमों में कई संज्ञाधारी उनका सेवाधर्म संचालित कर रहे हैं।

पीर बावर्ची भिस्ती खर एक साथ सब कुछ है सरकार– अपने पूर्व स्वरूप (अघोरेश्वर भगवान राम) द्वारा संचालित समाज सेवार्थ १९ सूत्रीय कार्यक्रम में संयुक्त कर पीठाधीश्वर जन स्वास्थ्य, चिकित्सा, आपदा-प्रबन्धन, शैक्षिक विकास का प्रकाश आदिम निवासियों की कुटी से लोक ग्रामीण चौपालों तक फैला रहे हैं। वर्ग संघर्ष, वर्णभेद, साम्प्रदायिकता जैसी भेद बुद्धि का तिरोहनकर्ता बाबा सिद्धार्थ गौतम राम तथागत भगवान बुद्ध की भूमिका में दिग्भ्रमित युवा वर्ग को आत्म साक्षात्कार कराते हुए राष्ट्र ऋण का बोध करा रहे हैं। १ मई श्रम दिवस एवं बुद्ध पूर्णिमा को प्रकट अघोराचार्य स्वयंसिद्ध भगवान बुद्ध हैं। श्रम पुरुषार्थ, सत्यनिष्ठ, ब्रह्मनिष्ठ, तपोमूर्ति बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के पावन पद रज कई निर्जीव जड़ को चेतन, दुर्भाग्य को सौभाग्य, अनाथ को सनाथ बना रहे हैं।

कार्य की प्राथमिकता विज्ञापन नहीं– कर्मयोगी महाराज श्री की सर्वोच्च प्राथमिकता कार्य में है, भाषण, प्रवचन, प्रचार-विज्ञापन में नहीं। उनका कोई विशेष पंथ नहीं है और न विशेष मत है। अनादि-आदि अवधूत मत के यथार्थ बोध की आदर्श प्रस्तुति उनके कार्यों एवं दर्शन में सम्मिलित है—

यह संसार असार अति, पाँच भूत की वारि।
ताते यह अवधूत मत विरच्यों स्वमति विचारी।।
(विवेकसार)

अपने आदि स्वरूप द्वारा निर्धारित पथ को आलोकित कर रहे हैं महाप्रभु-'दत्तात्रेयावधूतेन, निर्मितानन्दरूपिणा। ये पठन्ति च शृण्वन्ति तेषां नैव पुनर्भव (अवधूत-गीता) गौतम जी मेरे शिष्य हैं और मुझे प्रणाम करते हैं, किन्तु जब मैं क्रींकुण्ड कीनाराम स्थल जाता हूँ तो मन ही मन गौतम जी को शीश झुकाता हूँ।

(पं० दयाराम पाण्डेय कृत सारनाथ के आँगन में भूमिका विश्वनाथ प्रसाद सिंह अष्ठाना)

सिद्धार्थ गौतम राम रूपी दर्पण के सामने सिर्फ वर्तमान सक्रियता मिलता है। उनका वर्तमान अपने एक-एक मिनट का लेखा-जोखा रखता है। बाबा सिद्धार्थ गौतम राम की बुनियाद बीसवीं शताब्दी का बुद्ध कहकर अवधूत भगवान राम को सर्वेश्वरी त्वम् पाहिमाम कहता हूँ।

(पंडित दयाराम पाण्डेय सारनाथ के आंगन में)

सच तो यह है कि २१वीं शताब्दी के सिद्धार्थ गौतम बुद्ध अनादि शिव आदि शम्भु, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर ही नहीं क्रींकुण्ड पीठ से लौकिक, पारलौकिक एवं अलौकिक शक्तियों का संचालन कर रहे हैं।

चौथे पृष्ठ का शेष

में जाकर जहर छोड़ दिया। इसलिये आप लोग जहाँ रह रहे हैं, उस पर भी निगरानी रखें, बाहरी व्यक्ति क्यों इतना जल्दी सट रहा हैं? इसलिये सजग रहें। अपने गोप्य पूजन एवं खानपान में सतर्क रहे वे गोली तो मार नहीं सकते। ऐसा ही कुछ करके विडम्बना पैदा कर सकते हैं। इन लोगों से दूर-दूर दण्डवत करें। जैसा वे करते हैं, उससे भी लम्बी दण्डवत करें।

माता देवी हैं, उनसे दुराव नहीं हैं। किन्तु भाई लोग सयाने हो गये हैं। इनसे माँ भी घबरायी हुई हैं। ये पुत्र नहीं बच्चे हैं।

आस्था

चिड़िया उड़ गयी। बछड़ों की तरह,बचवा रहा तब तक खूब दूध पीया, बड़ा हुआ तो पहचानता भी नहीं। माता के तो सभी पुत्र हैं किन्तु बच्चे बन गये हैं। बच्चे बने हैं इसलिए उनके साथ करुणा नहीं रहती। बहुत से घरों में देखे होंगे। बच्चे बहुत होते हैं, पुत्र कम। ऐसे ही लोग कुल को नष्ट भी कर देते हैं।

हमें कुलीन भी होना चाहिये। कुल से हमारा मतलब है स्कूल की तरह। स्कूल में हर एक जाति, हर एक कास्ट, हर एक धर्म के अनुयायी रहते हैं, खाते पीते हैं। जो शिक्षा ब्राह्मण को दी जायेगी वह ही एक शूद्र को भी। एक कुल के माने एक स्कूल हैं। इस कुल (श्री सर्वेश्वरी समूह संस्था) में रहने वालों को यह समझना चाहिये।

भावुकता हमारे लिये बड़ा दु:खद हो सकती है। ईश्वर हमारे साथ न्याय करें। दया की भीख तो पाप कर्म है। रोगी चिल्ला रहा है, पर डाक्टर फोड़े को काटता है। दया करे तो मरीज की बुरी दशा हो जाये दया अपराध की वस्तु है, जहाँ न्याय है, वही उचित है, सत्य है। ईश्वर है। भगवती हम पर दया न करें।

पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, दैहिक बुद्धि वालों को होता है। जिसकी बुद्धि आत्मनिष्ठ है, आत्मा में प्रवृत्त हैं। उसके लिये यह सब कुछ नहीं है। आत्मा निर्द्वन्द्व, निर्विकार एवं निर्लिप्त है। वह मरता है न जीता है। किसी एक सिद्धान्त पर निश्चय करना भी आवश्यक है।

सर्वेश्वरी विवाह-पद्धति हमारे ऋषियों महर्षियों की ही परम्परा है

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

श्री सर्वेश्वरी समूह प्रधान कार्यालय, वाराणसी गत १ जून को श्री सर्वेश्वरी अघोरेश्वर भगवान राम जी ने कहा कि आपने इस सरल, सुगम, आडम्बर रहित परम्परा को देखा जो और कुछ नहीं बल्कि अपने ऋषियों, महर्षियों की ही परम्परा है। इसके साथ ही इसमें देश की संवैधानिक तथा कानूनी बातों की भी व्यवस्था की गयी है।

यह पद्धति उन धनी मानी लोगों के लिये नहीं है जो सुखी हैं, सम्पन्न हैं बल्कि हम मध्यम वर्ग के लोगों के लिये ही है। हमारे मिलने वाले मध्यमवर्गीय लोग जो हैं, उनकी बड़ी उलझने हैं, परेशानियाँ हैं। गरीब तो अपना समय किसी तरह काट लेता है। पर जो मध्यमवर्गीय हैं, उनकी संख्या इस देश में बहुत ज्यादा है और उनकी परेशानियाँ भी उतनी ही ज्यादा हैं। उनके लिये यह मार्ग है। उनके लिये यह विचारणीय विषय है। वे विचार करेंगे और इस मार्ग पर चलेंगे, मुझे आशा है।

बौद्ध काल से लेकर अभी तक ब्राह्मणवाद का तो प्रभाव था ही, इसमें बहुत आडम्बरवाद भी लगा था और बहुत सा कर्मकाण्ड लगा था जो समय काल के मुताबिक नहीं था पर जिसे मनुष्य लादे चला फिरता था। जिसका सबसे बड़ा बोझ मध्यम वर्ग पर ही था। इन्हीं कारणों से हम जो मध्यमवर्गीय है इसमें रुचि रखेंगे, मुझे आशा है।

इसी के साथ मैं कामना करता हूँ कि वर वधू इस देश के अच्छे जाने माने व्यक्ति हों और उनकी सन्तानें भी इस देश के सम्मानित नागरिक बनें और वे अच्छा से अच्छा कार्य करें, भगवती उनको प्रेरणा दें यही मेरी उनसे प्रार्थना है।

इस अवसर पर राजा विजेन्द्रनाथ शाही सोनपुरा, पलामू तथा श्रीकृष्णदेव राय ने नवविवाहित दम्पति श्री चन्द्रमा प्रासाद तथा श्रीमती सीतारानी को उपस्थित जनसमुदाय की ओर से आशीर्वाद दिया तथा उनके मंगलमय भविष्य की कामना की।

सर्वेश्वरी समूह, प्रधान कार्यालय, वाराणसी के प्रांगण में सम्पन्न हुए विवाह समारोह में वर वधू को आशीर्वाद देते हुए अघोरेश्वर भगवान राम जी ने कहा कि आप लोगों ने इस समय के मांगलिक कार्यों को देखा और इसके बारे में सुना। इसकी ऐसी ही धारणा है। जो अपना मध्यम वर्ग का समाज है, वह बड़ी उलझनी और दु:खों में है। उसके ऊपर रूढ़िता का बहुत प्रकोप है। वे उसे तोड़ने में बहुत झिड़झिड़ाते हैं। तोड़ नहीं पाते। दु:ख उलझनों से संघर्ष नहीं कर पाते। अनिश्चितता उनके साथ हो गयी है। मन मस्तिष्क निश्चित नहीं रह जाता।

तो यह विवाह पद्धति जन धनी मानी व्यापारी लोगों के लिये नहीं है जो अपने पुत्रों का भाव ताव करते है। बल्कि हम मध्यमवर्ग के लिये है जो बहुत सी उचित परम्पराओं से गुजरते हैं, छल छिद्र से वंचित हैं। किसी के धन को फूस और मिट्टी के समान देखते हैं। रिश्तेदारों के साथ ऐसा तुच्छ व्यवहार नहीं करना चाहते।

उन धनी मानी तथा दम्भियों के लिये यह सब कार्य बड़ा दुरुह है, दुषह है। क्योंकि उनकी कामनायें, उनके क्रिया कलाप सदा दम्भ के अन्तर्गत ही होंगे। पर वे भी कन्याओं तथा उनके परिवार वालों को कष्ट पहुँचा कर सुख चैन से नहीं रह सकते। क्योंकि वे तो सबके घर जाने वाली है, सबके घर पैदा होंगी और परेशानी खड़ा कर देंगी।

हम यदि साधारण हैं, यदि विचारवान हैं तो खुद समझ सकते हैं कि जिसके साथ सम्बन्ध करते हैं, उसकी सम्पत्तियों का इस तरह से अपहरण करा कर कौन बुद्धिमता करेंगे। शादी, बारात में अपने सम्बन्धी के धनका अपहरण करा कर दो घंटे के लिये लोगों की वाहवाही प्राप्त करते हैं फिर वे ही लोग बाद में धिक्कारते हैं। आप खुद देखें होंगे, अपने बन्धु-बान्धवों में।

तो इस तरह जो आपके जाति में देश में, वह अव्यवस्था फैलाये हैं, उनका धीरे-धीरे डटकर विरोध करें और उन लोगों के प्रति एक त्याज्य, घृणित भावना रखें क्योंकि उनका कार्य नर पिशाचों की तरह है। वे इन्सान की शक्ल में शैतान है। उनका काम शैतान का है जो अपहरण करते हैं, दबाव देते हैं और इन कुरीतियों में सहयोग करते हैं।

आपने जिस मांगलिक कार्य में सहयोग किया है, इसके लिये पवित्र विचार, पावन संकल्प चाहिये। यह महान यज्ञ है। किसी भी यज्ञ से यह सौगुना हजार गुना पुण्य देने वाला होगा। इसी के साथ मैं वर वधू को आशीर्वाद देता हूँ और भगवती से अनुरोध करता हूँ कि उनकी प्रेरणा से वे इस देश के सम्मानित व्यक्ति बनें, इस देश की जनता का विश्वास प्राप्त करें और वे ऐसी ही योग्यता रखें।

इस अवसर पर श्रीकृष्णदेव राय ने सर्वेश्वरी समूह विवाह पद्धति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस पद्धति का निरुपण विवाह सम्बन्धी भूत, वर्तमान तथा भविष्य की भी माँगों का ध्यान रख कर किया गया है। समूह अपनी प्राचीन परम्पराओं का सम्मान करता है और इस बात में विश्वास करता है कि इन सुपरम्पराओं में ही समाज की जीवन्त शक्ति सुरक्षित रहती है। इसीलिये इस पद्धति में पाणिग्रहण संस्कार, माल्यार्पण तथा सिन्दूर दान की सुन्दर व्यवस्था है।

वर्तमान की जो संवैधानिक तथा कानूनी माँगे हैं, उनको ध्यान में रखकर समूह की ओर से विवाह का रजिस्ट्रेशन होता है तथा वर-वधू द्वारा लिखित प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करने की व्यवस्था भी की गयी है।

इस विवाह पद्धति में भविष्य की माँगों का भी ध्यान रखा गया है। भविष्य के विवाह सम्बन्ध जाति तथा देश के बन्धनों को तोड़ने वाले हैं। एक समय था जब ब्राह्मण, हरिजन के साथ भोजन करना पाप समझता था पर सामाजिक जीवन में यह भेद लगभग मिट चुका है और इस तरह का सहभोज आज आदर्श माना जाता है। आज युवा एवं प्रबन्ध वर्ग की प्रवृत्तियाँ एवं धारणायें ऐसी है कि वे रोटी के साथ बेटी का भी भेद मिटाना चाहती हैं। भविष्य में यह भेद भी टिक नहीं सकता। अत: विभिन्न देश एवं जाति के वर वधू यदि विवाह सम्बन्ध करना चाहते हैं तो श्री सर्वेश्वरी समूह उन्हें सामाजिक मान्यता देता है और भावी समाज के लिये इसे श्रेयस्कर समझता है।

यह पद्धति तीनों कालों का ध्यान रखती है। यह त्रिकालदर्शी अघोरेश्वर की कृपा एवं निर्देश से ही सम्भव हो सका है। उन्हीं की कृपा से प्रतिवर्ष तिलक, दहेज अनावश्यक कर्मकाण्ड के प्रकोप से कितने लोग अपने को बचा पाते हैं तथा वर वधू दाम्पत्य जीवन का सही आदर्श लेकर यहाँ से जाते हैं। वे संयमी जीवन बिताने का संकल्प लेकर जाते हैं। इस तरह यह विवाह पद्धति ओजस्वी मेधावी संतानों की उत्पत्ति एवं तेजस्वी भावी पीढ़ी के निर्माण में सहयोग देती है।

अन्त में उपस्थित जनों की ओर से उन्होंने नवविवाहित दम्पति श्री सुरेन्द्र नाथ सिंह एवं श्रीमती सरस्वती शाही को आशीर्वाद दिया एवं उनके लम्बे एवं मंगलमय दाम्पत्य जीवन की कामना की।

आस्था

मन्त्रों के बारे में हमें कबीर की बात याद आती है। चाहे छल या श्रद्धा से कहिये उन्होंने राम का मन्त्र या उपदेश केवलएक बार ले लिया। उस उपदेश को उन्होंने अपने जीवन में प्रगाढ़ आस्था दिया, उस आस्था ने अन्दर की छुपी हुई सुन्दरता, कला, चित्र एवं बहुत सी बातों का उन्हें उद्भव कराया। उसको उन्होंने वाणियों, लेख एवं कविताओं द्वारा अभिव्यक्त किया। कबीर आज भी साहित्य में जीवित हैं, भारत के हर ग्रामीणों के वाणियों में पाये जाते हैं। आप सोचें उपदेश बहुत नहीं होता। इसके साथ उस व्यक्ति को आस्था और आस्था के साथ विश्वास हो तो उसे गृह, समाज भी नहीं छोड़ना पड़ता है। अपने भीतर अनन्त सुन्दरता है जिसे कहा या देखा नहीं जा सकता। सुन्दर चित्र लेखनी वाद्य आदि सब अपने आप में छिपा हुआ हैं जो व्यक्ति जिस किसी विषय की तरफ घूमता हैं, उसमें वह विशेषता प्राप्त कर लेता है उसका उसमें प्रभाव हो जाता है थोड़ा ही उपदेश आस्था के साथ अभ्यास और मनन होता रहे तो अपने आप सब होने लगता है।

हमारा आकर्षण जिधर होगा, वह ही हमारे लिये उचित और सत्य होगा। यदि खिंचाव गलत होगा तो वह स्थायी नहीं होगा। आस्था के साथ हम प्रेरित हो वह ही लाभप्रद होगा।

आज कल अपने देश में ऐसे लोग बहुत से फैल गये हैं जो साधक एवं आस्थावान लोगों में विघ्न डालते हैं। न कुछ हुआ हो तो किसी को भेज देते हैं। आया खूब साष्टांग प्रणाम किया और प्रसाद

शेष पृष्ठ तीन पर

अघोर सूत्र

☞ **जो अच्छा विचार कहता हो पर उन पर आचरण न करता हो, वह उस बैंक के अधिकारी की तरह है जो दिन भर करोड़ों रुपये गिनता और बाँटता भी है,पर शाम को घर लौटते समय उसे फूटी कौड़ी भी नहीं मिलती है।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी